

# **INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**



**ISSN 2277 – 9809 (online)**

**ISSN 2348 - 9359 (Print)**

*An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal*

[www.IRJMSH.com](http://www.IRJMSH.com)  
[www.isarasolutions.com](http://www.isarasolutions.com)

Published by iSaRa Solutions

## समकालीन भारत में पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत महिला राजनीतिक भागीदारी एवं सशक्तिकरण : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. बृजेश स्वरूप सोनकर,

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,

कर्म क्षेत्र महाविद्यालय, इटावा।

### सारांश

प्रस्तुत शोध पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी पर आधारित है। 73वें संविधान संशोधन के बाद पंचायतों में महिलाओं को आरक्षण मिलने से ग्रामीण स्तर पर उनकी राजनीतिक सहभागिता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इस अध्ययन का उद्देश्य महिलाओं की भागीदारी, उनके प्रतिनिधित्व की स्थिति, सामने आने वाली चुनौतियाँ तथा उनके सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण का अध्ययन करना रहा। शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों का उपयोग किया गया। प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत महिला जनप्रतिनिधियों से साक्षात्कार एवं संवाद किए गए, जबकि द्वितीयक स्रोतों में पुस्तकें, शोध-पत्र, सरकारी रिपोर्ट तथा निर्वाचन संबंधी आँकड़ों का उपयोग किया गया। अध्ययन का क्षेत्र इटावा जनपद रखा गया।

अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी ने ग्रामीण लोकतंत्र को मजबूत किया है तथा स्थानीय प्रशासन को अधिक प्रभावी बनाया है। महिलाओं ने शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और सामाजिक जागरूकता जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। साथ ही सामाजिक और आर्थिक चुनौतियाँ भी सामने आईं। समग्र रूप से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि पंचायती राज व्यवस्था महिलाओं के राजनीतिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण का एक प्रभावी माध्यम सिद्ध हुई है।

**मुख्य शब्द (Keywords) :** पंचायती राज व्यवस्था, महिला राजनीतिक भागीदारी, महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण लोकतंत्र, स्थानीय स्वशासन, महिला नेतृत्व, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, ग्रामीण विकास ।

### प्रस्तावना

भारतीय लोकतंत्र की सफलता और उसकी स्थायित्वपूर्ण विकास-यात्रा में स्थानीय स्वशासन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था तभी प्रभावी मानी जाती है जब जनता की भागीदारी केवल राष्ट्रीय और राज्य स्तर तक सीमित न रहकर स्थानीय

स्तर तक सुनिश्चित हो। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारत में पंचायती राज व्यवस्था को विकसित किया गया, जिससे ग्रामीण नागरिकों को प्रशासन एवं निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में प्रत्यक्ष भागीदारी का अवसर प्राप्त हो सके। पंचायती राज व्यवस्था भारतीय लोकतंत्र की वह आधारशिला है, जिसके माध्यम से शासन और विकास की प्रक्रिया गाँवों तक पहुँचती है तथा लोकतंत्र को वास्तविक अर्थों में जमीनी स्वरूप प्राप्त होता है।

भारत में पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक आधार प्रदान करने की दिशा में **73वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1992** एक ऐतिहासिक उपलब्धि सिद्ध हुआ। यह संशोधन 24 अप्रैल 1993 से प्रभावी हुआ, जिसके अंतर्गत संविधान में भाग-IX (अनुच्छेद 243 से 243-0) जोड़ा गया तथा पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक मान्यता प्रदान की गई। इस संशोधन के अंतर्गत ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद की त्रिस्तरीय व्यवस्था को सुदृढ़ किया गया तथा महिलाओं, अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण का प्रावधान किया गया। विशेष रूप से महिलाओं के लिए न्यूनतम **एक-तिहाई (33 प्रतिशत) आरक्षण** सुनिश्चित किया गया, जिसने भारतीय ग्रामीण राजनीति में महिलाओं की भागीदारी के लिए नए अवसर प्रदान किए।

समकालीन भारत में महिला राजनीतिक भागीदारी के क्षेत्र में पंचायती राज व्यवस्था एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी माध्यम के रूप में उभरी है। पंचायती राज मंत्रालय तथा विभिन्न सरकारी आँकड़ों के अनुसार वर्तमान समय में देशभर में पंचायती राज संस्थाओं में लगभग **14 लाख से अधिक निर्वाचित महिला प्रतिनिधि** सक्रिय हैं, जो कुल निर्वाचित प्रतिनिधियों का लगभग **46 प्रतिशत से अधिक** हिस्सा हैं। बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और महाराष्ट्र जैसे अनेक राज्यों ने महिलाओं के लिए **50 प्रतिशत तक आरक्षण** लागू किया है। इससे महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी केवल संख्या तक सीमित नहीं रही, बल्कि नेतृत्व और प्रशासनिक उत्तरदायित्व में भी उनकी उपस्थिति सुदृढ़ हुई है।

महिलाओं की इस बढ़ती राजनीतिक भागीदारी ने ग्रामीण समाज में सामाजिक परिवर्तन की नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। पंचायतों में महिलाओं की उपस्थिति के कारण शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, स्वच्छता, पोषण, महिला सुरक्षा और बच्चों के विकास जैसे विषयों को स्थानीय शासन में अधिक प्राथमिकता मिलने लगी है। कई अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि महिला प्रतिनिधियों ने स्थानीय प्रशासन को अधिक संवेदनशील और जनोन्मुख बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे महिलाओं में आत्मविश्वास, सार्वजनिक नेतृत्व क्षमता तथा राजनीतिक चेतना का विकास हुआ है, जो उनके व्यापक सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में भी सहायक सिद्ध हुआ है।

इसके बावजूद महिला राजनीतिक भागीदारी की वास्तविक स्थिति अनेक चुनौतियों से प्रभावित है। ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक रूढ़ियाँ, पितृसत्तात्मक मानसिकता, अशिक्षा, आर्थिक

निर्भरता, राजनीतिक अनुभव की कमी तथा पारिवारिक दबाव जैसे कारक महिलाओं की स्वतंत्र और प्रभावी राजनीतिक भूमिका को सीमित करते हैं। कई स्थानों पर “प्रॉक्सी प्रतिनिधित्व” की स्थिति भी देखने को मिलती है, जहाँ निर्वाचित महिला प्रतिनिधि के स्थान पर परिवार का पुरुष सदस्य निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में प्रमुख भूमिका निभाता है। इससे महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी कई बार केवल औपचारिक प्रतिनिधित्व तक सीमित रह जाती है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि महिला प्रतिनिधित्व का मूल्यांकन केवल संख्या के आधार पर न होकर उनकी वास्तविक निर्णय क्षमता, नेतृत्व और सामाजिक प्रभाव के आधार पर किया जाए।

वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में जब महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता और समावेशी लोकतंत्र को राष्ट्रीय विकास के महत्वपूर्ण आयामों के रूप में देखा जा रहा है, तब पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का अध्ययन और अधिक प्रासंगिक हो जाता है। यह विषय न केवल लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया को समझने में सहायक है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि स्थानीय शासन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ग्रामीण समाज में सामाजिक न्याय, समान अवसर और सतत विकास को किस प्रकार प्रभावित करती है।

अतः प्रस्तुत शोध “समकालीन भारत में पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत महिला राजनीतिक भागीदारी एवं सशक्तिकरण : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन” के माध्यम से महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी की वर्तमान स्थिति, उसके प्रभाव, उससे संबंधित चुनौतियों तथा महिला सशक्तिकरण में उसकी भूमिका का विश्लेषण किया गया है।

## शोध समस्या

भारतीय लोकतंत्र में पंचायती राज व्यवस्था स्थानीय स्वशासन की सबसे महत्वपूर्ण इकाई मानी जाती है। 73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 के माध्यम से पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए न्यूनतम 33 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित किया गया, जिसका उद्देश्य महिलाओं को राजनीतिक प्रक्रिया में सहभागी बनाना और ग्रामीण शासन में उनकी भूमिका को सशक्त करना था। वर्तमान समय में अनेक राज्यों में यह आरक्षण 50 प्रतिशत तक बढ़ा दिया गया है। इस संवैधानिक व्यवस्था के परिणामस्वरूप पंचायतों में महिलाओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और बड़ी संख्या में महिलाएँ ग्राम पंचायत, पंचायत समिति तथा जिला परिषद जैसे स्थानीय निकायों में निर्वाचित होकर नेतृत्व की भूमिका निभा रही हैं।

यद्यपि महिला प्रतिनिधित्व की संख्या में वृद्धि भारतीय लोकतंत्र के लिए एक सकारात्मक परिवर्तन है, फिर भी यह प्रश्न महत्वपूर्ण बना हुआ है कि क्या यह भागीदारी वास्तव में प्रभावी और सार्थक है। अनेक क्षेत्रों में यह देखा गया है कि महिलाओं को संवैधानिक रूप से प्रतिनिधित्व तो प्राप्त हुआ है, किंतु निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में उनकी स्वतंत्र और

सक्रिय भूमिका अभी भी सीमित है। कई बार निर्वाचित महिला प्रतिनिधि के स्थान पर परिवार के पुरुष सदस्य या अन्य प्रभावशाली व्यक्ति पंचायत के कार्यों और निर्णयों को नियंत्रित करते हैं। इस स्थिति को सामान्यतः “प्रॉक्सी प्रतिनिधित्व” के रूप में देखा जाता है, जिससे महिलाओं की वास्तविक राजनीतिक भूमिका प्रभावित होती है।

इसके अतिरिक्त ग्रामीण समाज में प्रचलित पितृसत्तात्मक मानसिकता, सामाजिक रूढ़ियाँ, शिक्षा का अभाव, आर्थिक निर्भरता, राजनीतिक प्रशिक्षण की कमी तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओं की जटिलता भी महिलाओं की प्रभावी राजनीतिक भागीदारी के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती हैं। परिणामस्वरूप कई स्थानों पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व केवल औपचारिक उपस्थिति तक सीमित रह जाता है और वे नीति-निर्धारण तथा विकास योजनाओं में अपेक्षित भूमिका नहीं निभा पातीं। दूसरी ओर अनेक उदाहरण ऐसे भी हैं जहाँ महिला प्रतिनिधियों ने पंचायतों के माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, जल प्रबंधन, महिला सुरक्षा और सामाजिक कल्याण जैसे क्षेत्रों में प्रभावशाली नेतृत्व प्रदान किया है।

ऐसी स्थिति में यह शोध समस्या महत्वपूर्ण हो जाती है कि पंचायतीराज व्यवस्था में महिलाओं की बढ़ती राजनीतिक भागीदारी को केवल संख्या के आधार पर न देखा जाए, बल्कि उसकी वास्तविक प्रभावशीलता और उसके सामाजिक-राजनीतिक परिणामों का भी विश्लेषण किया जाए। यह जानना आवश्यक है कि वर्तमान भारत में महिलाएँ पंचायतों में कितनी स्वतंत्रता और सक्रियता के साथ निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में भाग ले रही हैं; उनकी भागीदारी ने ग्रामीण शासन व्यवस्था और विकास को किस प्रकार प्रभावित किया है; तथा इससे उनके सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण में कितना परिवर्तन आया है।

अतः प्रस्तुत शोध का केंद्रीय प्रश्न यह है कि समकालीन भारत में पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी किस सीमा तक प्रभावी और सार्थक है तथा इससे उनके सामाजिक एवं राजनीतिक सशक्तिकरण पर क्या प्रभाव पड़ा है। यही प्रश्न इस अध्ययन की मुख्य शोध समस्या का आधार है, जिसका विश्लेषण वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ में किया गया है।

### अध्ययन के उद्देश्य

1. पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का अध्ययन करना।
2. पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।
3. महिला राजनीतिक भागीदारी के समक्ष आने वाली प्रमुख सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक चुनौतियों का अध्ययन करना।

4. महिलाओं की भागीदारी से हुए सामाजिक एवं राजनीतिक सशक्तिकरण का मूल्यांकन करना।
5. महिला नेतृत्व को अधिक प्रभावी बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

### प्राकल्पनाएँ (Hypotheses)

1. पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण से उनकी राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई है।
2. महिला राजनीतिक भागीदारी से उनके सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है।
3. सामाजिक और आर्थिक चुनौतियाँ महिलाओं की प्रभावी राजनीतिक भूमिका को प्रभावित करती हैं।
4. पंचायतों में सक्रिय महिला नेतृत्व ग्रामीण विकास और स्थानीय प्रशासन को अधिक प्रभावी बनाता है।

### शोध प्रश्न

1. पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की वर्तमान राजनीतिक भागीदारी की स्थिति क्या है?
2. क्या महिला आरक्षण ने स्थानीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका को प्रभावी बनाया है?
3. महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में कौन-कौन सी बाधाएँ उपस्थित हैं?
4. क्या पंचायती राज संस्थाओं में भागीदारी से महिलाओं के सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण में वृद्धि हुई है?

### अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत शोध “समकालीन भारत में पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत महिला राजनीतिक भागीदारी एवं सशक्तिकरण : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन” का अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश के इटावा जनपद तक सीमित रखा गया है। शोध कार्य के लिए इटावा जनपद का चयन इसलिए किया गया क्योंकि यह उत्तर प्रदेश के प्रमुख जनपदों में से एक है, जहाँ ग्रामीण सामाजिक संरचना, स्थानीय प्रशासन तथा पंचायती राज संस्थाओं की सक्रियता स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। जनपद की ग्रामीण परिस्थितियाँ तथा पंचायत स्तर पर महिलाओं की भागीदारी का स्वरूप इस विषय के अध्ययन के लिए उपयुक्त पाया गया।

इस शोध में इटावा जनपद की ग्राम पंचायत पचावली को अध्ययन की प्राथमिक इकाई के रूप में चयनित किया गया। ग्राम पंचायत पचावली में महिला राजनीतिक भागीदारी और उनके सशक्तिकरण की वास्तविक स्थिति को समझने के उद्देश्य से प्रत्यक्ष अध्ययन किया

गया। इस अध्ययन के अंतर्गत पंचायत के निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों, ग्राम पंचायत के सदस्यों तथा स्थानीय ग्रामीण महिलाओं से संपर्क स्थापित कर आवश्यक तथ्य संकलित किए गए। इससे पंचायत स्तर पर महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता, नेतृत्व क्षमता और निर्णय-निर्माण में उनकी भागीदारी की वास्तविक स्थिति को समझने में सहायता प्राप्त हुई।

शोध कार्य के दौरान यह पाया गया कि ग्राम पंचायत पंचायती में महिलाओं की पंचायत स्तर पर भागीदारी संवैधानिक रूप से सुनिश्चित है तथा महिला प्रतिनिधि पंचायत की बैठकों और स्थानीय प्रशासनिक गतिविधियों में भाग लेती हैं। ग्राम प्रधान एवं अन्य महिला सदस्यों की उपस्थिति पंचायत की कार्यप्रणाली में स्पष्ट रूप से दिखाई दी। साथ ही यह भी पाया गया कि महिलाओं की भागीदारी ने स्थानीय स्तर पर विकास संबंधी मुद्दों—जैसे स्वच्छता, पेयजल, सड़क, शिक्षा तथा सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन—में सक्रिय भूमिका निभाई है।

अध्ययन के दौरान यह तथ्य भी सामने आया कि महिला प्रतिनिधियों की राजनीतिक भागीदारी केवल औपचारिक उपस्थिति तक सीमित नहीं रही, बल्कि अनेक मामलों में उन्होंने ग्रामसभा और पंचायत बैठकों में अपनी बात रखी तथा स्थानीय समस्याओं के समाधान में सहभागिता निभाई। वहीं कुछ परिस्थितियों में सामाजिक परंपराएँ, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ तथा ग्रामीण परिवेश की पारंपरिक मानसिकता भी उनकी सक्रिय भूमिका को प्रभावित करती हुई दिखाई दी। इन परिस्थितियों के बावजूद पंचायत स्तर पर महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता, आत्मविश्वास और सार्वजनिक उत्तरदायित्व की भावना में वृद्धि स्पष्ट रूप से देखी गई।

ग्राम पंचायत पंचायती के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि पंचायती राज व्यवस्था ने ग्रामीण महिलाओं को स्थानीय शासन में भागीदारी का अवसर प्रदान किया है तथा इससे उनके सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण को व्यवहारिक आधार मिला है। पंचायत की गतिविधियों में भागीदारी के माध्यम से महिलाओं में नेतृत्व क्षमता का विकास हुआ तथा वे स्थानीय प्रशासनिक प्रक्रियाओं से अधिक प्रत्यक्ष रूप से जुड़ीं।

अतः प्रस्तुत शोध का अध्ययन क्षेत्र **जनपद इटावा की ग्राम पंचायत पंचायती** तक सीमित रहा तथा इसी क्षेत्र में किए गए प्रत्यक्ष अध्ययन और संकलित तथ्यों के आधार पर पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी एवं सशक्तिकरण का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन स्थानीय स्तर की वास्तविक परिस्थितियों को सामने लाते हुए समकालीन ग्रामीण भारत में महिला राजनीतिक भागीदारी की स्थिति को समझने का एक व्यवहारिक आधार प्रस्तुत करता है।

## शोध पद्धति

किसी भी शोध की विश्वसनीयता उसकी शोध पद्धति पर निर्भर करती है। प्रस्तुत शोध कार्य में विषय की प्रकृति एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त शोध पद्धति का चयन

किया गया है। अध्ययन के दौरान तथ्यों का संकलन, उनका विश्लेषण तथा निष्कर्ष निकालने की प्रक्रिया वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित रूप से संपन्न की गई है, जिससे शोध विषय का यथार्थपरक एवं तथ्यपरक अध्ययन संभव हो सके।

### क. शोध का प्रकार - विश्लेषणात्मक शोध

प्रस्तुत शोध कार्य **विश्लेषणात्मक शोध** पर आधारित है। इस पद्धति के अंतर्गत महिला जनप्रतिनिधियों की पंचायत स्तर पर भूमिका, उनके अधिकारों के उपयोग, निर्णय प्रक्रिया में सहभागिता तथा सामाजिक एवं प्रशासनिक चुनौतियों का गहन अध्ययन किया गया है। इसमें उपलब्ध तथ्यों एवं आंकड़ों का विश्लेषण करते हुए महिला नेतृत्व की वास्तविक स्थिति को समझने का प्रयास किया गया है।

विश्लेषणात्मक शोध पद्धति के माध्यम से विषय के विभिन्न आयामों—जैसे राजनीतिक सहभागिता, निर्णय लेने की क्षमता, सामाजिक स्वीकृति एवं प्रशासनिक योगदान—का अध्ययन किया गया है। इस प्रक्रिया में प्राप्त तथ्यों का तुलनात्मक एवं तार्किक विश्लेषण कर शोध के उद्देश्यों के अनुरूप निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

### ख. तथ्य संकलन के स्रोत

प्रस्तुत शोध में तथ्य संकलन हेतु **प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों** का उपयोग किया गया है, ताकि अध्ययन अधिक प्रामाणिक, संतुलित एवं व्यापक बन सके।

#### 1. प्राथमिक स्रोत

प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत शोधकर्ता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से जानकारी प्राप्त की गई। इसके लिए निम्नलिखित माध्यमों का उपयोग किया गया—

- **साक्षात्कार अनुसूची** – महिला जनप्रतिनिधियों से पूर्व निर्धारित प्रश्नों के आधार पर जानकारी प्राप्त की गई, जिससे उनके अनुभव, समस्याएँ एवं पंचायत कार्यों में उनकी भागीदारी को समझा जा सके।
- **महिला जनप्रतिनिधियों से संवाद** – व्यक्तिगत संवाद के माध्यम से उनके विचार, कार्यशैली, नेतृत्व क्षमता तथा पंचायत व्यवस्था में उनकी भूमिका से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त की गईं।

प्राथमिक स्रोतों से प्राप्त जानकारी ने अध्ययन को व्यावहारिक एवं वास्तविक स्वरूप प्रदान किया।

#### 2. द्वितीयक स्रोत

द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत विषय से संबंधित प्रकाशित एवं प्रामाणिक सामग्री का अध्ययन किया गया। इसमें निम्नलिखित स्रोत सम्मिलित रहे—

- **पुस्तकें** – विषय से संबंधित विभिन्न लेखकों की पुस्तकों का अध्ययन कर सैद्धांतिक आधार प्राप्त किया गया।
- **शोध-पत्र एवं जर्नल** – पूर्व प्रकाशित शोध एवं लेखों के माध्यम से विषय की पृष्ठभूमि तथा विभिन्न दृष्टिकोणों को समझा गया।
- **सरकारी रिपोर्ट** – पंचायत व्यवस्था एवं महिला प्रतिनिधित्व से संबंधित आधिकारिक रिपोर्टों का अध्ययन किया गया।
- **पंचायती राज मंत्रालय की रिपोर्ट** – पंचायतों की संरचना, कार्यप्रणाली तथा महिला आरक्षण संबंधी तथ्य प्राप्त किए गए।
- **भारत निर्वाचन आयोग के आँकड़े** – महिला जनप्रतिनिधियों की संख्या एवं निर्वाचन संबंधी आंकड़ों का उपयोग किया गया।
- **महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के दस्तावेज** – महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति से संबंधित उपयोगी जानकारी प्राप्त की गई।

इस प्रकार प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों के माध्यम से प्राप्त तथ्यों का समन्वित एवं व्यवस्थित विश्लेषण कर शोध को तथ्यपरक, प्रमाणिक एवं विश्वसनीय बनाने का प्रयास किया गया है।

### सारणी - 1

#### भारत में पंचायती राज संस्थाओं में निर्वाचित प्रतिनिधियों एवं महिला प्रतिनिधियों की स्थिति

क्रम संख्या	विवरण	संख्या
1.	कुल निर्वाचित प्रतिनिधि (भारत)	28,13,698
2.	निर्वाचित महिला प्रतिनिधि	13,75,000 (लगभग)
3.	महिला प्रतिनिधित्व का प्रतिशत	48.9% (लगभग)

**स्रोत:** भारत सरकार, पंचायती राज मंत्रालय, *Annual Report 2015-16*; तथा पंचायती राज संस्थाओं से संबंधित उपलब्ध सरकारी आँकड़े।

#### सारणी का विश्लेषण

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2015-16 तक भारत की पंचायती राज संस्थाओं में लगभग 28 लाख से अधिक निर्वाचित प्रतिनिधि कार्यरत थे, जिनमें लगभग 13.75 लाख महिलाएँ थीं। इस प्रकार स्थानीय स्वशासन संस्थाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व लगभग 49 प्रतिशत तक पहुँच गया था, जो संविधान के 73वें संशोधन के परिणामस्वरूप महिला राजनीतिक सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा सकती है। यह स्थिति दर्शाती है कि स्थानीय स्तर पर निर्णय-निर्माण की

प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी निरंतर बढ़ रही थी, जो लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण और सामाजिक समावेशन के उद्देश्यों को सुदृढ़ करती है।

उपरोक्त सारणी स्पष्ट करती है कि भारत की पंचायती राज संस्थाओं में लगभग आधे प्रतिनिधि महिलाएँ हैं। यह 73वें संविधान संशोधन के बाद महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में आए वास्तविक और संस्थागत परिवर्तन को दर्शाता है।

## सारणी - 2

### पंचायती राज संस्थाओं की संरचना (भारत)

क्रम संख्या	संस्था	कुल संख्या
1.	ग्राम पंचायत	2,55,699
2.	मध्यवर्ती पंचायत (पंचायत समिति/ब्लॉक)	6,665
3.	जिला पंचायत	598
4.	कुल पंचायत संस्थाएँ	2,62,962

स्रोत: भारत सरकार, पंचायती राज मंत्रालय, *Basic Statistics of Panchayati Raj Institutions*.

यह तालिका बताती है कि पंचायती राज व्यवस्था का सबसे बड़ा आधार ग्राम पंचायत है। इतने व्यापक ढाँचे में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ग्रामीण शासन और निर्णय प्रक्रिया में उनकी वास्तविक उपस्थिति को प्रमाणित करती है।

## सारणी - 3

### शोध में प्रयुक्त तथ्य-संकलन के प्रमाणिक स्रोत

क्रम संख्या	स्रोत	प्रकार	शोध में उपयोग
1.	अनुसूची द्वारा साक्षात्कार	प्राथमिक	महिला प्रतिनिधियों के अनुभव एवं विचार
2.	महिला जनप्रतिनिधियों से संवाद	प्राथमिक	स्थानीय समस्याएँ एवं नेतृत्व अनुभव
3.	पंचायती राज मंत्रालय वार्षिक रिपोर्ट	द्वितीयक	राष्ट्रीय आँकड़े एवं संस्थागत जानकारी
4.	भारत निर्वाचन आयोग	द्वितीयक	निर्वाचन संबंधी तथ्य
5.	महिला एवं बाल विकास मंत्रालय	द्वितीयक	महिला सशक्तिकरण संबंधी तथ्य

क्रम संख्या	स्रोत	प्रकार	शोध में उपयोग
6.	पुस्तकें एवं शोध-पत्र	द्वितीयक	सैद्धांतिक आधार

यह तालिका स्पष्ट करती है कि शोध प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रमाणिक स्रोतों पर आधारित है। इससे अध्ययन की विश्वसनीयता और अकादमिक प्रामाणिकता मजबूत होती है।

#### सारणी - 4

#### इटावा जनपद की जनसांख्यिकीय एवं ग्रामीण स्थिति (जनगणना 2011)

क्रमांक	विवरण	आँकड़े
1	कुल जनसंख्या	15,81,810
2	पुरुष जनसंख्या	8,45,856
3	महिला जनसंख्या	7,35,954
4	लिंगानुपात (प्रति 1000 पुरुष)	870
5	कुल साक्षरता दर	78.41%
6	पुरुष साक्षरता दर	86.06%
7	महिला साक्षरता दर	69.61%
8	कुल गाँवों की संख्या	692
9	तहसीलों की संख्या	5
10	ग्रामीण जनसंख्या	12,15,342 (लगभग 76.8%)

**स्रोत:** भारत की जनगणना 2011 एवं इटावा जनपद के आधिकारिक अभिलेख।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि इटावा जनपद मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्र है, जहाँ लगभग 76 प्रतिशत से अधिक आबादी गाँवों में निवास करती है। जिले में महिला साक्षरता दर 69.61 प्रतिशत है, जो यह दर्शाती है कि महिलाओं की शिक्षा की स्थिति पहले की तुलना में बेहतर हुई है। ग्रामीण क्षेत्र की अधिकता तथा पंचायत व्यवस्था की व्यापक उपस्थिति के कारण इटावा जनपद महिला जनप्रतिनिधियों की भूमिका, सहभागिता और नेतृत्व क्षमता के अध्ययन के लिए उपयुक्त क्षेत्र सिद्ध होता है।

#### अध्ययन का महत्व

प्रस्तुत अध्ययन पंचायती राज संस्थाओं में महिला नेतृत्व की भूमिका, उनकी सहभागिता तथा उनके समक्ष उपस्थित चुनौतियों को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। अध्ययन के

दौरान यह तथ्य सामने आए कि पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी ने ग्रामीण प्रशासन और स्थानीय निर्णय प्रक्रिया को प्रभावशाली रूप से प्रभावित किया है। महिला प्रतिनिधियों ने पंचायत स्तर पर अपनी सक्रिय भूमिका निभाते हुए विकास संबंधी योजनाओं के संचालन तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन में उल्लेखनीय योगदान दिया।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि महिला सशक्तिकरण की दिशा में पंचायतों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। पंचायतों में महिलाओं की सहभागिता के कारण ग्रामीण समाज में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, महिला कल्याण तथा सामाजिक जागरूकता के क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिले। महिला प्रतिनिधियों की सक्रिय उपस्थिति ने न केवल प्रशासनिक कार्यों को गति प्रदान की, बल्कि ग्रामीण समाज में महिलाओं की स्थिति को भी अधिक सशक्त और प्रभावी बनाया।

अध्ययन ने ग्रामीण लोकतंत्र और सामाजिक परिवर्तन को समझने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक समानता तथा जनसहभागिता की भावना को मजबूती मिली। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन महिला नेतृत्व की वास्तविक स्थिति को स्पष्ट करने के साथ-साथ ग्रामीण समाज में लोकतांत्रिक विकास और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार सिद्ध हुआ।

### **उद्देश्यों एवं प्राकल्पनाओं का प्रमाणीकरण**

प्रस्तुत शोध में निर्धारित उद्देश्यों एवं प्राकल्पनाओं का परीक्षण प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त तथ्यों, महिला जनप्रतिनिधियों से संवाद तथा उपलब्ध सरकारी अभिलेखों के आधार पर किया गया। अध्ययन के दौरान प्राप्त निष्कर्ष निम्न प्रकार से सामने आए—

#### **1. पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का अध्ययन करना**

अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। पंचायत चुनावों में महिलाओं की सक्रिय उपस्थिति तथा निर्णय प्रक्रिया में उनकी सहभागिता ने ग्रामीण शासन व्यवस्था में उनकी भूमिका को मजबूत किया। महिला प्रतिनिधियों ने स्थानीय समस्याओं के समाधान, योजनाओं के संचालन तथा जनहित से जुड़े निर्णयों में सक्रिय योगदान दिया। यह उद्देश्य पूर्ण रूप से प्रमाणित हुआ कि पंचायती राज व्यवस्था ने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

#### **2. पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना**

शोध के दौरान उपलब्ध सरकारी आँकड़ों एवं क्षेत्रीय अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व प्रभावशाली रूप से स्थापित हुआ है।

आरक्षण व्यवस्था के कारण बड़ी संख्या में महिलाएँ ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत एवं जिला पंचायत स्तर पर निर्वाचित हुईं तथा उन्होंने प्रशासनिक कार्यों में सहभागिता निभाई। यह उद्देश्य प्रमाणित हुआ कि वर्तमान समय में पंचायतों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व मजबूत और सक्रिय रूप से स्थापित है।

### 3. महिला राजनीतिक भागीदारी के समक्ष आने वाली प्रमुख सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक चुनौतियों का अध्ययन करना

अध्ययन में यह तथ्य सामने आए कि महिला प्रतिनिधियों को सामाजिक परंपराओं, पारिवारिक दबाव, सीमित आर्थिक संसाधनों तथा प्रशासनिक अनुभव के अभाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। कई स्थानों पर सामाजिक दृष्टिकोण एवं निर्णय प्रक्रिया में पुरुषों की परंपरागत प्रधानता भी महिलाओं की सक्रिय भूमिका को प्रभावित करती दिखाई दी। यह उद्देश्य भी प्रमाणित हुआ कि सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियाँ महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता और नेतृत्व क्षमता को प्रभावित करती हैं।

### 4. महिलाओं की भागीदारी से हुए सामाजिक एवं राजनीतिक सशक्तिकरण का मूल्यांकन करना

अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी के कारण ग्रामीण समाज में महिलाओं के आत्मविश्वास, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि हुई। महिला प्रतिनिधियों की सक्रियता से शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता तथा महिला कल्याण से संबंधित विषयों को प्राथमिकता मिली और सामाजिक जागरूकता भी बढ़ी। यह उद्देश्य प्रमाणित हुआ कि महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी ने सामाजिक एवं राजनीतिक सशक्तिकरण को मजबूत किया।

### 5. महिला नेतृत्व को अधिक प्रभावी बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना

शोध में यह पाया गया कि महिला नेतृत्व को अधिक प्रभावी बनाने के लिए प्रशिक्षण, प्रशासनिक जानकारी, सरकारी सहयोग तथा सामाजिक समर्थन की आवश्यकता महत्वपूर्ण रही। जिन क्षेत्रों में महिला प्रतिनिधियों को पर्याप्त सहयोग मिला, वहाँ उनकी कार्यक्षमता अधिक प्रभावशाली रही। यह उद्देश्य भी पूर्ण रूप से प्रमाणित हुआ कि महिला नेतृत्व को सशक्त बनाने के लिए संस्थागत सहयोग एवं प्रशिक्षण आवश्यक है।

### प्राकल्पनाओं का प्रमाणीकरण

**पंचायती राज institutions में महिलाओं के लिए आरक्षण से उनकी राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई है।**

अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि आरक्षण व्यवस्था के परिणामस्वरूप पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई। यह प्राकल्पना पूर्णतः प्रमाणित हुई।

- महिला राजनीतिक भागीदारी से उनके सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है।

अध्ययन से महिलाओं के आत्मविश्वास, सामाजिक सम्मान एवं निर्णय क्षमता में वृद्धि स्पष्ट रूप से सामने आई। यह प्राकल्पना प्रमाणित हुई।

- सामाजिक और आर्थिक चुनौतियाँ महिलाओं की प्रभावी राजनीतिक भूमिका को प्रभावित करती हैं।

क्षेत्रीय अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि अनेक सामाजिक एवं आर्थिक बाधाएँ महिलाओं के नेतृत्व को प्रभावित करती हैं। यह प्राकल्पना प्रमाणित हुई।

- पंचायतों में सक्रिय महिला नेतृत्व ग्रामीण विकास और स्थानीय प्रशासन को अधिक प्रभावी बनाता है।

- अध्ययन में पाया गया कि महिला प्रतिनिधियों की सक्रियता से विकास योजनाओं के संचालन एवं सामाजिक कार्यों में सकारात्मक प्रभाव पड़ा। यह प्राकल्पना भी प्रमाणित हुई।

## निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के आधार पर यह निष्कर्ष सामने आया कि पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी ने ग्रामीण लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय संविधान के 73वें संशोधन के अंतर्गत पंचायतों में महिलाओं को आरक्षण प्रदान किए जाने के बाद उनकी भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और ग्रामीण प्रशासन में उनकी उपस्थिति प्रभावशाली रूप से स्थापित हुई। अध्ययन के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि पंचायतों में महिलाओं की सक्रिय सहभागिता ने उन्हें केवल प्रतिनिधित्व तक सीमित नहीं रखा, बल्कि स्थानीय शासन और विकास संबंधी निर्णयों में भी उनकी भूमिका को मजबूत किया।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि पंचायतों में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों ने ग्रामीण समाज में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, पेयजल, महिला कल्याण तथा सामाजिक जागरूकता जैसे विषयों को प्राथमिकता दी। महिला प्रतिनिधियों की भागीदारी के परिणामस्वरूप पंचायत स्तर पर अनेक विकासात्मक कार्यों को गति मिली और स्थानीय समस्याओं के समाधान में जनसहभागिता को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। इससे ग्रामीण समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों, पारदर्शिता तथा उत्तरदायित्व की भावना को मजबूती मिली।

शोध के दौरान यह तथ्य भी सामने आया कि महिला प्रतिनिधियों को अपनी भूमिका के निर्वहन में कई सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, सामाजिक परंपराएँ, सीमित संसाधन, प्रशासनिक अनुभव का अभाव तथा कई स्थानों पर पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था जैसी परिस्थितियों ने उनकी कार्यक्षमता को प्रभावित

किया। इसके बावजूद महिला प्रतिनिधियों ने पंचायत स्तर पर अपनी सक्रिय उपस्थिति और कार्यकुशलता से यह सिद्ध किया कि उन्हें अवसर और सहयोग मिलने पर वे प्रभावी नेतृत्व प्रदान करने में सक्षम हैं।

अध्ययन से यह भी प्रमाणित हुआ कि पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी ने उनके सामाजिक एवं राजनीतिक सशक्तिकरण को मजबूत किया। पंचायतों में निर्वाचित होने के बाद महिलाओं के आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता और सामाजिक सम्मान में वृद्धि हुई। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में भी सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला तथा सार्वजनिक जीवन में उनकी स्वीकार्यता और सक्रियता बढ़ी।

इटावा जनपद के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण क्षेत्र में महिला प्रतिनिधियों की भूमिका स्थानीय प्रशासन एवं विकास कार्यों में महत्वपूर्ण रही। महिला जनप्रतिनिधियों ने क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य करते हुए पंचायत स्तर पर विकास योजनाओं के संचालन और सामाजिक हित के मुद्दों को आगे बढ़ाने में प्रभावी योगदान दिया। इससे यह स्पष्ट हुआ कि पंचायती राज व्यवस्था महिलाओं को नेतृत्व का व्यावहारिक मंच प्रदान करने में सफल रही है।

अतः समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी ने न केवल महिलाओं को सशक्त बनाया, बल्कि ग्रामीण लोकतंत्र, सामाजिक समानता और स्थानीय विकास को भी नई दिशा प्रदान की। अध्ययन यह प्रमाणित करता है कि महिला नेतृत्व ग्रामीण शासन व्यवस्था को अधिक उत्तरदायी, सहभागी और प्रभावशाली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध महिला राजनीतिक सहभागिता और पंचायती राज व्यवस्था के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट करने वाला एक महत्वपूर्ण एवं तथ्यपरक अध्ययन सिद्ध हुआ।

## संदर्भ सूची

1. भारत सरकार, पंचायती राज मंत्रालय, (2014), *वार्षिक प्रतिवेदन 2013-14*, पंचायती राज मंत्रालय, नई दिल्ली।
2. भारत सरकार, पंचायती राज मंत्रालय, (2013), *पंचायती राज संस्थाओं के मूल सांख्यिकीय आँकड़े*, भारत सरकार, नई दिल्ली।
3. भारत सरकार, जनगणना आयुक्त कार्यालय, (2011), *जिला जनगणना पुस्तिका: इटावा, उत्तर प्रदेश*, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली।
4. भारत सरकार, (2011), *भारत की जनगणना 2011 : उत्तर प्रदेश जिला शृंखला - इटावा*, नई दिल्ली: भारत सरकार।

5. भारत सरकार, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, (2013), *वार्षिक प्रतिवेदन 2012-13*, भारत सरकार, नई दिल्ली।
6. भारत निर्वाचन आयोग। (2014), *भारत में स्थानीय निकाय चुनावों की सांख्यिकीय रिपोर्ट*, निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली।
7. नारायणन, आई. (2005), *भारत में पंचायती राज प्रशासन*, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली , पृ. 168।
8. सिंह, कृष्ण कुमार, (2011), *महिलाएँ और पंचायती राज संस्थाएँ*, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ. 35।
9. शर्मा, एस. के. (2014), *महिला सशक्तिकरण और पंचायती राज*, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर, पृ. 281।
10. झा, एस. एन. (2014), “भारत में पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी”, *इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस*, 77(2), पृ. 261।
11. यादव, रामप्रकाश, (2012)। “स्थानीय शासन में ग्रामीण महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी”, *ग्रामीण विकास जर्नल*, 37(4), पृ. 628।
12. उत्तर प्रदेश पंचायती राज विभाग, (2013), *उत्तर प्रदेश पंचायती राज विभाग वार्षिक प्रतिवेदन*, लखनऊ: उत्तर प्रदेश शासन।
13. *कुरुक्षेत्र पत्रिका*, (2013), “महिला सशक्तिकरण और पंचायती राज व्यवस्था”, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, 71(8), पृ. 24।
14. *योजना पत्रिका*, (2012), “ग्रामीण विकास और महिला नेतृत्व”, नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 66(11), पृ. 35।
15. *द हिन्दू*, (14 सितम्बर 2013), “पंचायती राज और ग्रामीण प्रशासन में महिलाओं का नेतृत्व”, नई दिल्ली संस्करण।
16. *हिन्दुस्तान*, (18 जनवरी 2014), “इटावा में पंचायतों की विकास योजनाओं में महिला प्रतिनिधियों की सक्रिय भूमिका”, इटावा संस्करण।
17. *दैनिक जागरण*, (7 फरवरी 2014), “ग्रामीण क्षेत्रों में महिला जनप्रतिनिधियों की बढ़ती भागीदारी,” कानपुर-इटावा संस्करण।
18. *अमर उजाला*, (22 दिसम्बर 2013), “पंचायती राज में महिलाओं की भागीदारी और सामाजिक परिवर्तन”, उत्तर प्रदेश संस्करण।
19. राष्ट्रीय महिला आयोग, (2012), *भारत में स्थानीय शासन में महिलाओं की स्थिति*, नई दिल्ली: राष्ट्रीय महिला आयोग।
20. संयुक्त राष्ट्र महिला भारत (यूएन विमेन इंडिया), (2012), *भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और नेतृत्व*, नई दिल्ली।



# EARN YOUR MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

R  
S  
E  
A  
R  
C  
H  
G  
A  
T  
E  
W  
A  
Y

## STOP PLAGIARISM



**Arogyam Ayurveda**  
Holistic Healing through herbs



A  
R  
O  
G  
Y  
A  
M  
O  
N  
L  
I  
N  
E

## PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER



### COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



- BLUE** Calms your Child's Mind & Body
- YELLOW** Promotes Concentration, Stimulates the Memory
- PINK** Evokes Empathy, makes your Child Calm
- RED** Excites and energizes your Child's body
- GREEN** Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com



Confuse about your children's future?

**भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध**

ISSN 2321 – 9726

[WWW.BHARTIYASHODH.COM](http://WWW.BHARTIYASHODH.COM)



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF  
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

[WWW.IRJMST.COM](http://WWW.IRJMST.COM)



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF  
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

[WWW.CASIRJ.COM](http://WWW.CASIRJ.COM)



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF  
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

[WWW.IRJMSSH.COM](http://WWW.IRJMSSH.COM)



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE  
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

[WWW.RJSET.COM](http://WWW.RJSET.COM)



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF  
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

[WWW.IRJMISI.COM](http://WWW.IRJMISI.COM)



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS  
AND ECONOMICS RESEARCH**

[WWW.JLPER.COM](http://WWW.JLPER.COM)

**JLPE**